# प्रफुल्ल कोलख्यान की कुछ कविताएँ

प्रफुल्ल कोलख्यान

स्मृतिशेष पितामही इंद्रमाया की उस कलम की तलाश में
--- जो उनके हाथ से छिटक कर
इतनी दूर जा गिरी कि
उन्हें कभी नहीं मिली ---
ये कविताएँ
उन्हें समर्पित है
जो गढ़ने में इतने व्यस्त हैं कि
पढ़ने की फुरसत नहीं

## अच्छे शब्द दो

एक अच्छी कविता के बारे में
सोचते हुए
मैं आपके बारे में
सोचने लगता हूँ

आपके बारे में
सोचते हुए मैं
एक अच्छी कविता के बारे में
सोचने लगता हूँ

अच्छे आदमी
और अच्छी कविता के बारे में
सोचते हुए मैं अक्सर
शब्दों से इतर
सोचने लगता हूँ

हे अच्छे लोगो!
हमें अच्छे शब्द दो

प्रदूषित भाषा के
दूषित शब्दों से
नहीं लिखी जा सकती अच्छी कविता

और
अच्छी कविता के बिना
नहीं जी सकता अच्छा आदमी

इसलिए
हे अच्छे लोगो!
हमें अच्छे शब्द दो
कोयले की तरह---- दहकते हुए!

## ताजा खबर

कौन है
जो रोक लेता है
शब्द को

कौन है
जो रोक लेता है
शब्द को
प्रकाश और गति में बदल जाने से

पता नहीं
सच है या अफवाह है

लोग कह रहे हैं
शब्द तो बिका हुआ गवाह है

खाली झोली लिये
बाजार से
लौट आये लोग
उदास चूल्हे के पास
बैठी बीवी को
बता रहे हैं
आज की ताजा खबर कि
गल्ले की कचहरी में
भूख का मुकदमा
खारिज हो गया

## दूधिया उजास

चिता की लपट
मद्धम न पड़ जाये
और उजाला किये जाने का
भरम बना रहे
इसका ख्यालकर
तेजी से
सुलगाये जा रहे हैं जंगल

जंगल
कुहरे और
चाँदनी की जाली के बीच
सुन्न हवा में
गोलियाँ उड़ रही हैं
परिंदों के पंख से बँधे नारों के साथ

ओ अनागत शिशु!

तुम जरा किलको तो
अपनी मुट्ठियों को धँसाते हुए
आसमान के क्रूर हृदय में

तुम्हारे लाल-लाल ओठ के बीच से
निकले दूधिया उजास से
जी उठेगा सूरज

लौट आयेगा
धरती के पाँव में
खोया हुआ विश्वास

बछड़े की आवाज सुन
दौड़ती-हुमकती हुई
लौटती गाय की तरह

ओ अनागत शिशु!
तुम जरा किलको तो

## सोचिये कि सोचना जरूरी है

चलती गाड़ी
की ओर
पत्थर उछाल देता है बच्चा

बच्चा क्या सोचता है?

चलती गाड़ी
की खिड़कियाँ
बंद कर लेता है मुसाफिर

मुसाफिर क्या सोचता है?

पटरियों को
उखाड़ फेंकता है जवान

जवान क्या सोचता है?

अखबार को
एक झटके से
किनारे कर देता है अधेड़

अधेड़ क्या सोचता है?
अधूरी पढ़कर
कविता को पलट देते हहैं आप

आप क्या सोचते हैं?

## हाँफता इतिहास

जब चाँद को
ग्रहण लगता है
तब क्या
सचमुच ग्रहण लगता है
सिर्फ चाँद को ही?

धरती नहीं होती है गर्हित!
रोशनी के ग्रहण से?

प्रशांत समुद्र का हो
या सपनीली आँखों का
नहीं हो जाता है बेचैन
खारा पानी?

शोक सभा में
नहीं बदल जाता है
तारों का छलछलाता उल्लास?

और एक मुकाम पर
नहीं हाँफने लगता है इतिहास?

जब रोशनी को ग्रहण लगता है!

**इस सामग्री के उपयोग के लिए लेखक की सहमति अपेक्षित है।**
**सादर, प्रफुल्ल कोलख्यान**